प्रथम दीक्षान्त समारोह, अक्टूबर 15, 2019
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना
डॉ0 मंगला राय का दीक्षान्त भाषण

प्रथम दीक्षान्त समारोह के अध्यक्ष, बिहार प्रान्त के महामहिम राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय कुलाधिपति, माननीय फागु चौहान जी, समारोह के विि" ाश्ट अतिथि एवं प्रदे" ा के कृशि, प" ुपालन एवं मत्स्य पालन मंत्री श्री प्रेम कुमार जी, वि" वविद्यालय के कुलपति डा0 रामेश्वर सिंह जी, सम्मानित जन प्रतिनिधिगण, शैक्षणिक परिषद एवं प्रबंध मंडल के सदस्यगण, अतिथिगण, संकाय सदस्यगण, प्रचार एवं प्रसार माध्यमों के सदस्यगण, प्यारे बच्चों, देवियों एवं सज्जनों!

सर्वप्रथम मैं समस्त स्नातकों को अपनी शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ जिन्होंने कठिन परिश्रम के बाद उपाधि एवं पुरस्कार अर्जित किए हैं। आप के आभा मंडल को देख कर ऐसा लगता है कि आप सब नई चुनौतियों को स्वीकार करने को उत्सुक हैं और इस विश्वविद्यालय की सीमा के पार नए संसार में अपनी अमिट छाप छोड़ने को तत्पर हैं।

मित्रों! मेरे मानस पटल पर अतीत की अनेक घटनायें हिलोरें ले रही हैं। आज से करीब 30 वर्श पूर्व अखिल भारतीय तिलहन समन्वित अनुसंधान परियोजना के वार्शिक सम्मेलन में आपके इस परिसर में मैं पहली बार आया था। तब आपका वैटर्नरी कॉलेज राजेन्द्र कृशि विश्वविद्यालय का एक अंग था। यहीं से पहली बार प्रक्षेत्र प्रद" ीन का निर्णय लिया गया था और तब के सेस फंड से तीन वर्शों के लिए 29 लाख रुपयों की लागत से प्रक्षेत्र प्रद" ीन की परियोजना भाुरू की गई थी। प्रति प्रद" ीन 160 रुपये मिलता था। एक वर्श में ही अद्‌भुत अनुभव हुआ और करोंड़ों की योजनायें स्वीकृत होनें लगीं। कालान्तर में, मछली उत्पादन की असीम सम्भावनाओं को देखते हुए करीब 20–22 वर्श पहले उप–महानिदे" ाक (फसल) के पद पर होते हुए भी मैनें ढ़ोली में मत्स्य विभाग की आधारि" ाला रखी थी। आज यह कहते हुए मुझे अपार

हर्श की अनुभूति हो रही है कि बिहार प्रदे" ा कृशि कैबिनेट में मैने एक प्रस्ताव रखा और माननीय मुख्यमंत्री जी ने तुरन्त उस पर अपनी संस्तुति दे दी। परिणामतः यह वि" वविद्यालय अस्तित्व में आया। अतएव इस दूरगामी निर्णय के लिए प्रदे" ा सरकार का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करना, मै अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

सूचना–प्रणाली की आम आदमी तक प्रतिपल बढ़ती हुई सुगमता से, आज गाँव के सभी लोग विषमता की पहचान एवं विकास की आवश्यकता के बारे में पहले से कहीं अधिक जागरूक हैं। उनकी इच्छा और आकांक्षा आसमान की नई ऊँचाइयों को छू रही है। अतः विकास के बावजूद असंतोष पहले से ज्यादा बढ़ रहा है। अतएव आज के परिवे" ा में यह जरूरी है कि वास्तविक सामाजिक व आर्थिक परिदृश्य को पहचाना जाए तथा समाज की विसंगतियों एवं विशमताओं का यथा" ाीघ्र निराकरण किया जाय एवं इच्छा की अनुपूर्ति के अनुरूप प्रयास को और प्रबल किया जाय।

हरित क्रांति की भ्रुरूआत के साथ ही 1974 में आयोजित प्रथम विश्व खाद्य–शिखर सम्मेलन में ***''एक दशक के अंदर विश्व भूखमरी को मिटाने''*** का संकल्प लिया गया था। तब से करीब 45 वर्ष बीत चुके हैं और 1996, 2000 तथा 2002 की अल्प अवधि में तीन विश्व खाद्य–शिखर सम्मेलन आयोजित किए गए पर 2015 तक विश्व से सिर्फ आधी भूखमरी हटाने की बात ही कही गई। वह भी आज तक पूरी नहीं हुई बल्कि यह संख्या और बढ़ी है।

हमारे दे" ा में सम्पूर्ण वि" व की 17.78% आबादी है, 11% प" ाु संख्या है और पानी मात्र 4.2% और जमीन मात्र 2.3% है। विगत 60 वर्शों में खेती–बारी का रकबा करीब 140 मिलियन हेक्टेयर के आस पास टिका हुआ है जबकि आबादी करीब चार गुना बढ़ गई है। समय–समय पर आप सबके अथक प्रयास से दे" ा में अन्न उत्पादन करीब छः गुना, दुग्ध उत्पादन 10 गुना, मछली उत्पादन 15 गुना और अण्डा उत्पादन तो 50 गुना बढ़ गया है। कृशक भाई–बहनों सहित उत्कृश्ट कार्य के लिए आप सबको बहुत–बहुत बधाई एवं आभार। विगत 60 वर्शों में अण्डा उत्पादन की चक्रवृद्धि दर 20% प्रतिवर्श से अधिक और 1997–2003 के बीच में तो यह दर 40.68% रही।

किस–किस का नाम लूँ, सब तो बढ़ा–ही–बढ़ा पर खाद्य और सुरक्षा का प्र" न आज भी बना हुआ नहीं है क्या? अतएव इस गरीबी, बेरोजगारी और भूखमरी की जारी जंग में आप का योगदान तो चाहिए ही चाहिए। अन्यथा भाान्ति का सपना सपना ही रह जायेगा।

जब तक मनुज मनुज का, सुख भाग नहीं सम होगा।
भामित न होगा कोलाहल, संघर्श नहीं कम होगा।।

बिहार प्रदे" ा की सबसे बड़ी पूँजी उसकी उर्वरा भूमि और गुणवत्तापूर्ण जल का भंडार है। दोनों पर आज संकट के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे में क्या आप एनिमल हसबेन्ड्री के साथ–ही–साथ समग्र रूप में लैण्ड हसबेन्ड्री की भी बात सोचेंगे?

दे" ा में सबसे पहले Quality Protein Maize की उन्नति" ाील प्रजातियाँ लगभग दो द" ाक पहले, बिहार में ही विकसित की गईं, पर उनका कितना उत्पादन और उपभोग आप कर रहे हैं? आप का मक्का आँध्र प्रदे" ा जाता है तथा अण्डा और मछली वहाँ से यहाँ आता है। आप अपने बहुमूल्य मक्के का भरपूर उपयोग कर अण्डा–मछली का उत्पादन यहाँ क्यों नही बढ़ा सकते हैं? अगर अण्डा उत्पादन की चक्रवृद्धि दर कुछ वर्शों में दे" ा में 40% के ऊपर जा सकती है, तो आप के यहाँ अण्डा, मछली का उत्पादन 30% क्यों नही बढ़ सकता? मछली आप पूरे South East Asia को खिला सकते हैं। भरपूर लाभ कमा सकते हैं और घर–घर में रोजगार पैदा कर सकते हैं। मित्रों, इस तरह की अनेक सम्भावनायें आप का आह्वाहन कर रहीं हैं।

विद्यार्थी के जीवनकाल में तीन युगों का संगम होता है। अतीत की उपलब्धियाँ, मान्यताओं और आस्थाओं के साथ उसके जीवन में उतरती हैं। वर्तमान की समस्याएँ समाधान के लिये उसकी ओर देखती हैं और परिवार तथा समाज की आ" ाओं और आकाँक्षाओं के चित्र स्वप्न बनकर उसकी आँखों में तैरते हैं। वृद्ध व्यक्ति अनुभव आधारित कुछ ज्ञान दे सकता है, परन्तु रचना और निर्माण का उसका युग प्रायः समाप्त हो चुका होता है। बालक–बालिकायें तो स्वयं ही निर्माण के क्रम है इसीलिये दोनों के बीच की जो पीढ़ी है– युवा पीढ़ी, वही राष्ट्र निर्माण को असली गति प्रदान

कर सकती है। युगों का सुख, युगों की समृद्धि बस उसी के हाथों में संरक्षित है। इसलिए आज आप का उत्तरदायित्व पहले से बहुत बढ़ गया है।

आपको अपने जीवन में संकल्प शक्ति को दृढ़ करना होगा एवं अपना लक्ष्य खुद निर्धारित करना होगा। आप संसार के घटनाक्रम को और समाज में हो रही उथल–पुथल को अपनी इच्छानुसार नहीं बदल सकते परन्तु अपने अन्दर इतना मनोबल अवश्य उत्पन्न कर सकते हैं कि उनका कोई कुप्रभाव किसी प्रकार भी आपको अपने निर्धारित मार्ग से विचलित न कर सके।

''निन्दन्तु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समावि''ातु गच्छतु वा यथेश्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति, पदं न धीराः।।''

आज की शिक्षा पद्धति में उद्देश्य को केंद्र में रखने तथा उद्देश्य की प्राप्ति के लिये समायोजित संसाधनों को सुनिश्चित करने की भावना का काफी कुछ अभाव हो गया है। अनेकों ि" ाक्षण संस्थानों में पठन–पाठन, परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने मात्र तक ही सिमट गया है। आज पूरी शिक्षा व्यवस्था में अक्षर एवं अंकों का बाहुल्य नजर आता है। क्या शिक्षा का यही उद्देश्य है? बहुधा हमसब भूत और भविश्य में तैरते, वर्तमान में प्रयासहीन रहते हैं। फल प्राप्ति के स्तर को पहले ही सुनिश्चित कर लेते हैं और वांछित फल प्राप्त न होने पर कुण्ठा, निराशा और हताशा के शिकार होते चले जाते हैं।

याद रहे, जीवन मूल्यों की स्थापना और एक सुन्दर व्यवस्था बनाने और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए आपको ''***बज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि***'' में निहित सार को समझना होगा और इन गुणों को सदैव अपने साथ रखना होगा। आपको याद रखना होगा कि मंदिर–मस्जिद वहीं है, जहाँ मन अन्दर जाए। अतएव आपके अपने हर कार्यस्थल पर मन के अन्दर जाने वाली सुगंधित बयार बहती रहनी चाहिए और ***सुजलाम् सुफलाम् मलयज्" ीतलाम्*** का स्वप्न साकार होते रहना चाहिए।

प्रकृति और पुरूश दोनों ही अनादि काल से परिवर्तन" ाील हैं। समय के अनुसार विकार और गुण प्रकृति से उत्पन्न होते रहते हैं। आज आप वही हैं, जिसकी आपने कभी इच्छा की थी। इच्छा के अनुरूप ही आपकी आकांक्षा होनी चाहिए और आकांक्षा के अनुरूप ही आपके कर्म। वस्तुस्थिति तो यही है कि जैसा आपका कर्म वैसा ही आपका भाग्य। फिर भाग्य भरोसे क्यों रहना? भाग्य को क्यों कोसना? इच्छा भाक्ति को प्रबल कीजिए। आकांक्षाओं को आसमान की ऊचाईयाँ छूने दीजिए और प्रबल प्रयास से कल का अपना, अपने प्रदे" ा और दे" ा का स्वर्णिम सोपान बनाईये।

आज कल आत्म निरीक्षण से हमारा नाता कम रह गया है। हम स्वाभिमान के नाम पर अभिमान में डूबते चले जाते हैं। हमें भान ही नहीं रहता कि स्वाभिमान की दीवार कब और कहाँ ध्वस्त हो गई? हम सामाजिक एवं आर्थिक भय से इतने आक्रान्त हो जाते हैं कि सदा शक्ति विहीन नजर आते हैं। एक भयभीत व्यक्ति न स्वयं का कल्याण कर सकता है, न समाज का, न देश का। अतएव भय को भगाना ही होगा और यह सम्भव होगा आत्म चिन्तन से, आत्म अवलोकन से, आत्म मन्थन से और अन्ततोगत्वा अपनी वास्तविक पहचान से। कृपया अपने को पहचानने का प्रयास जरा और तेज कीजिये।

इस संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है। कुछ भी स्थाई नहीं है। यह ब्रह्माण्ड विस्तृत विनिमय के सिद्धांत पर आधारित है। समस्या तो तब आती है जब हम लेना तो सबकुछ चाहते है पर देना कुछ भी नहीं चाहते। लेन–देन में समन्वय स्थापित कीजिए, जीवन सुखमय हो जायेगा। समाज रहने लायक होगा। प्रदे" ा और देश अपने महानता के शिखर पर पहुँच जायेगा। यदि आप प्रसन्न रहना चाहते हैं तो अपने सहकर्मी को प्रसन्न रखिए। यदि आप प्रेम पात्र बनना चाहते हैं तो दूसरों के प्रति प्रेम की भावना जगाईये। यह जीवन चेतन का अनन्य नृत्य है। हमारा प्रत्येक कर्म ऐसी ऊर्जा पैदा करता है जिसका प्रत्युत्तर भी वैसा ही होता है।

युगों–युगों से ज्ञान ही धन रहा है। आज भी ज्ञान ही अस्त्र और " ास्त्र है। और–तो–और अब ज्ञान ही वैभव और विकास का मान तथा मापदण्ड भी है। यदि

ज्ञान सर्वोपरि है तो फिर ज्ञान है क्या? जो अन्तःकरण के कणकण में आत्मसात हो जाये और मानव कल्याण का सोपान बन जाये, वही वास्तविक ज्ञान है। आज भ्रमव" ा, हम सूचना को ही ज्ञान समझ बैठे हैं एवं वास्तविक ज्ञान और ज्ञानी पुरुशों की पहचान से परे हो गये हैं। आज जो ज्ञान है वह अज्ञान का रंचमात्र है और किसी भी दे" ा और काल में वह रंचमात्र ही रहेगा। ज्ञान की पराकाश्ठा अनन्त है अतएव धन प्राप्ति की सम्भावना भी अनन्त ही है। **''अगस्त पाथाधिम् यद् कृतम् कराम्बोजकूहरे, क्रियासिद्धि सत्वे भवति महताम् नोपकरणे''**। याद रहे किसी कार्य की सफलता पुरुशार्थ पर निर्भर है, बड़े–बड़े उपकरणों पर नहीं।

किसी भी विशय के क्रमबद्ध ज्ञान को ही विज्ञान मानिये और सामान्य बोध को उन्नयन और विकास का सोपान बनाइये। विवेकानन्द जी के कहे "Most uncommon in this world is common sense" के निहितार्थ को समझिये एवं उसका अनुसरण कीजिये। विवेकानन्द जी ने ही कहा था **''उत्ति‘ ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत''।** सोकर उठना आव" यक है, पर उठकर जागना नितान्त आव" यक है। जाग्रत अवस्था ही मनुश्य को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। आपको स्वयं में, समाज में, प्रदे" ा में, दे" ा में, संगठन और संस्था में आ" ाा, आस्था और वि" वास रखना होगा। अटल वि" वास ही भाक्ति का मूल स्रोत है। स्वयं पर, स्वयं का भाासन स्थापित कर अनु" ाासित होईये।

मित्रों, अब मैं आज की कुछ प्रमुख अनुसंधान एवं विकास की आव" यकताओं पर आपका ध्यान आकृ‘ ट करना चाहूँगा।

- परिस्थिति जन्य समन्वित खेतीबारी–प" ुपालन–मछली पालन आधारित उत्पादन और उपभोग प्रणाली का विकास करना होगा। आव" यक होगा कि प्रदे" ा की कृशि एवं प" ुपालन के वि" वविद्यालयों की एक सम्मिलित, समन्वित परियोजना बनाई जाये

- प्रदे” ा में मछली उत्पादन की चक्रवृद्धि दर 30% एक द” ाक तक लगातार प्राप्त करना आव” यक है। यह आसान और सम्भव है। इसे 3–4 वर्शों में क्रमबद्ध तरीके से हासिल किया जा सकता है। इसमें जल प्रबन्धन, जीरा उत्पादन, चारा उत्पादन आदि पर ध्यान देना होगा।
- गुणवत्तापूर्ण सीमेन का उत्पादन और उपयोग सुनि” चत करना पड़ेगा, जिससे मनचाही बछिया ही उत्पन्न की जा सके। यह कार्य मेरठ में करीब 15 वर्श पहले भाुरू हुआ था। आज एन०डी०आर०आई० भी काम कर रहा है। सबको कंधे–से–कंधा मिला कर आगे बढ़ना होगा।
- प्रदे” ा को कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ वर्श दर वर्श झेलना पड़ता है। अतएव, चारे की गुणवत्तापूर्ण प्रजातियों का विकास, बीज उत्पादन, पशु आहार उत्पादन, मूल्य सम्वर्धन, फीड ब्लॉक निर्माण, भंडारण और यथास्थिति उपयोग प्रणाली विकसित करनी होगी तथा एक समसामयिक नीति निर्धारण के साथ उसका कार्यान्वयन करना होगा।
- प” ाुधन सुरक्षा हेतु समग्र समेकित स्वास्थ्य प्रणाली का विकास करना होगा। सेन्सर आधारित रोग पहचान, निदान एवं रोग निवारण पर परियोजना बनानी और चलानी होगी। दवा डिलेवरी प्रणाली का विकास, नैनो टेक्नोलॉजी का विकास एवं डी०एन०ए० वैक्सीन का उत्पादन तथा सदुपयोग करना होगा।
- जुनोटिक बीमारियों पर एक समेकित प्रणाली बनानी होगी। मानव चिकित्सा आधारित अनुसंधानकर्ताओं के साथ समुचित समन्वित रोग निवारण का प्रयास करना होगा। आपको समीपवर्ती मेडिकल संस्थान को साथ रखना होगा।
- गुणवत्तापूर्ण चूजे, पिगलेट, मछली जीरा आदि का समुचित उत्पादन और उपयोग करना होगा। इसपर वि” ोश बल अत्यंत लाभकारी होगा।

- कृशि को लाभकारी बनाने के लिए तथाकथित Waste को Wealth में परिवर्तित करना होगा। मूल्य सम्वर्धित विविधीकृत उत्पाद बनाना होगा तथा प्राइमरी प्रोडक्ट आधारित कृशि व्यवस्था में परिवर्तन करना होगा।
- समयानुकूल नाना प्रकार के उत्पाद, मूल्य सम्वर्धन, भण्डारण, वाणिज्य, विपणन और उपभोग की समुचित व्यवस्था विकसित करने पर वि" ोश बल देना होगा।

मित्रों, याद रहे जो कल्पना की परिधि में है वह सब सम्भव है। भाव को प्रबल कीजिए और अभाव को भरने में अपना योगदान दीजिए। सत्य को पहचानिए। जहाँ सत्य है वहाँ भाान्ति जहाँ असत्य वहाँ अ" ाान्ति। जहाँ भाान्ति वहाँ सृजन जहाँ अ" ाान्ति वहाँ क्षरण।

मित्रों! अब अपनी बात को यहीं विराम देते हुए भगवान बुद्ध को याद करते हैं जिन्होंनें कहा था कि किताबों में जो लिखा है, उस पर वि" वास मत करो। कक्षाओं में जो पढ़ाया गया है, उस पर भी वि" वास मत करो। जो सुना सुनाया है, उसपर तो वि" वास करो ही मत। अपने बुद्धि और विवेक के तराजू पर सबको तौलो–परखो, अनुभव करो और जो आपको उचित लगे वही करो–''**आत्म दीपो भवः''।**

आप सबका बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।